उपमा कालिदासस्य

MA – IV Sem

- Dr. UMA SHARMA
H.O.D, SANSKRIT
N.A.S Degree College, Meerut

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य
कवि है जिस प्रकार श्रीराम नाम का स्मरण आ जाने मात्र से एक अनुकरणीय
आदर्श, अनुपम मर्यादा का भान हो जाता है उसी प्रकार उपमा
नाम आ जाने से 'उपमा कालिदासस्य' इस पंक्ति का ~~अनायास~~
अधरो से अनायास प्रस्फुटन हो उठता है —
उपमा का इतिवृत्त अति चिरन्तन है। ऋग्वेद से लेकर आज
तक के निर्मित काव्य-जगत में वह ~~आदि~~ अधिष्ठात्री देवी की भाँति
मूर्धन्य स्थान पर प्रतिष्ठित हैं ~~[illegible]~~ इसका क्षेत्र इतना
विशाल है कि सादृश्य-मूलक रूपक, उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति
उपमेयोपमा संदेह अपह्नुति दीपक निदर्शना आदि
अलंकार मूल रूप से उसी से सम्बद्ध हैं। इसलिए
आचार्य अप्पय दीक्षित अपने चित्रमीमांसा नामक ग्रन्थ
में उपमा को एक ऐसी नटी बतलाते है जो काव्य-
रूपी रङ्गमञ्च पर विभिन्न रूपों में अपना नृत्य दिखलाती
हुई काव्यरसिकों के चित्त को हठात आनन्दित करती है—

उपमैका शैलूषी सम्प्राप्ता चित्रभूमिकाभेदान्।
रञ्जयन्ती काव्यरङ्गे नृत्यन्ती तद्विदां चेतः॥

आचार्यों ने उपमा अलंकार के अनेक भेद गिनाएं है
कालिदास के काव्यों मे यत्र-तत्र सभी भेदो के दर्शन होते
हैं। कालिदास की उपमाओं में रमणीयता विविधता, यथार्थता
और औचित्यादि के दर्शन होते हैं यहाँ उपमा सम्बन्धी कुछ
वैशिष्ट्य प्रस्तुत किये जाते हैं—

यथार्थता तथा भावाभिव्यञ्जकता— कालिदास की उपमायें
प्रसङ्गानुकूल होती हैं और उनमें यथार्थता होती है। यथार्थता
के कारण उनके (उपमाओं के) माध्यम से भावों की व्यञ्जना

कराकर वे यथार्थ बिम्ब खड़ा कर देते हैं रघुवंश में वर्णित स्वयंवर में इन्दुमती जयमाल लिए जिस- जिस राजा को छोड़कर आगे बढ़ जाती है उसके मुख पर नैराश्य की कालिमा उसी प्रकार छा जाती है जिस प्रकार रात्रि में राजमार्ग पर आगे बढ़ने वाली दीपशिखा से और भूमिपालों की उपमा राजपथ के भवनों से देकर कालिदास ने राजाओं के अन्तः में छिपे नैराश्य को कितने सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया है। इसी औपम्य विधान के कारण कालिदास 'दीपशिखा कालिदास' कहे जाते हैं -

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा ।
नरेन्द्र मार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः ॥
6/67

वैज्ञानिकता— कालिदास के औपम्य विधान में इनकी मनोवैज्ञानिकता सूक्ष्म का परिचय मिलता है कुमारसम्भव के पञ्चम सर्ग में जब कटुवादी ब्रह्मचारी से क्रुद्ध होकर पार्वती जाने के लिए उद्यत होती हैं तो उसी समय प्रकट होकर शङ्कर उन्हें रोक लेते हैं। उस समय उनकी दशा मार्ग में पर्वत के द्वारा रोकी गई उस क्षुब्ध नदी की भाँति हो जाती है जो न आगे बढ़ पाती है और न रुक ही पाती है:

तं वीक्ष्य वेपथुमती सरसाङ्गयष्टिर्निक्षेपणाय पदमुद्धृतमुद्वहन्ती ।
मार्गाचलव्यतिकराकुलितेव सिन्धुः शैलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ ॥
5/85

उपमानग्रहण मे व्यापकता- कालिदास ने औपम्य-विधान में उपमानों का चयन इतने व्यापक क्षेत्र से किया है कि उनकी उपमाओं का जगत विशाल हो गया है. आकाश पाताल पशु-पक्षी वन- उपवन लोकशास्त्र सभी क्षेत्रों से उन्होंने आवश्यकतानुसार उपमानों का चयन करके अपनी उपमा को सर्वव्यापी बनाया है कुछ उदाहरण-निम्नांकित हैं-

राजा दिलीप और उनकी पत्नी सुदक्षिणा के बीच लोहितवर्णा नन्दिनी गौ इसी प्रकार सुशोभित हो रही है। जिस पर दिन और रात के बीच संध्या-

तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥

इसीप्रकार रघुवंश के द्वितीय सर्ग में सांयकाल जब नन्दिनी घर की ओर लौटती है तो उस समय इसकी शोभा सूर्य की निवृत्त होने वाली प्रभा के समान हो जाती है-

"प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा प्रभा पतङ्गस्य मुनेश्च धेनुः।"

शास्त्रीय उपमाओं के द्वारा वस्तु-सौन्दर्य का वर्णन करने में भी कालिदास नितान्त दक्ष हैं-

श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत" यहाँ पर नन्दिनी के पीछे चलने वाले दिलीप की श्रुति का अनुसरण करने वाली स्मृति से दी गई उपमा आध्यात्मिक है. साथ ही अत्यन्त आह्लादकर।

प्राकृतिक उपादानों का ~~साहाय्य~~ साहाय्य — कालिदास ने प्रकृति के उपादानों को लेकर सौन्दर्य का मूर्तिमान और आकर्षक स्वरूप खड़ा करने में भी सफलता प्राप्त की है एतदर्थ अभिज्ञानशाकुन्तल के निम्नांकित स्थल द्रष्टव्य हैं —

अधरः किसलयरागः ---- शा० 1/21"

अनाघ्रातं पुष्पं .... शा० 2/10

सरसिजमनुविद्धम् .... शा० 1/20"

ऋषियों के मध्य शकुन्तला जीर्णपत्तों के मध्य किसलय के समान है। कितनी सुन्दर उपमा है :—

मध्य तपोधनानां किसलयमिव पाण्डुपत्राणाम् /5/13

सूक्ष्मभावाभिव्यञ्जकता — कालिदास मानव मन की सूक्ष्माति-सूक्ष्म भावनाओं को भी अपने प्रातिभचक्षु से जान लेते हैं और अपने अनुपम औपम्य विधान द्वारा उनका उद्घाटन भी बड़े सुन्दर ढंग से करते हैं। अपनी प्रेयसी शकुन्तला के प्रति उद्भूत भावनाओं के साथ कर्तव्यवश उसको छोड़कर जाते हुये राजा दुष्यन्त के हृदय में जो एक अन्तर्द्वन्द्व खड़ा होता है, उसका औपम्य के द्वारा यथार्थ प्रकाशन कितना मनमोहक है —

गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य॥ शा० 1/33

औचित्य —; कालिदास की उपमाओं में औचित्य का निर्वाह हुआ है वे देश, काल, पात्र समस्त अवस्थाओं

के अनुरूप काव्य के प्रत्येक शब्द में अर्थ भर देने में बेजोड़ हैं। शाकुन्तल के चतुर्थ अंक में शकुन्तला के गान्धर्व विवाह का ज्ञान हो जाने पर उनका यह कथन इस बात का प्रमाण है —

दिष्ट्या धूमाकुलित दृष्टेरपि यजमानस्य पावक
एवाहुतिः पतिता "।

यहाँ पर आश्रम पालिता शकुन्तला धूमाकुलित दृष्टि याज्ञिक की आहुति है और राजा दुष्यन्त यज्ञीय अग्नि। दुष्यन्त सुशिष्य के समान है और शकुन्तला उनको सौंपी गई विद्या के समान। तपोवन जैसे स्थान में महर्षि कण्व जैसे वक्ता की दृष्टि में दुष्यन्त और शकुन्तला क्रमशः यज्ञीय अग्नि, सुशिष्य तथा हविष एवं विद्या से भिन्न और क्या हो सकते हैं?

इसी प्रकार शार्ङ्गरव की निम्नांकित उक्ति में भी औचित्य का भाव कूट-कूट कर भरा है। दुष्यन्त की दृष्टि में जो शकुन्तला अनाघ्रात पुष्प थी, वही शार्ङ्गरव की दृष्टि में मूर्तिमती सत्क्रिया हो जाती है —

त्वमर्हतां प्राग्रसरः स्मृतोऽसि नः, शकुन्तला मूर्तिमती
च सत्क्रिया ॥" — शा० 5/15

विराट् तत्त्व — शाकुन्तल के चतुर्थ अंक में पितृवियोग से विकल होकर शकुन्तला पिता कण्व से लिपट जाती है और कहती है कि पिता से वियुक्त होकर वह कैसे जीवन धारण करेगी?" उसको समझाते हुये कण्व कहते हैं —

तनयमचिरात् प्राचीनार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि।
शा० 4/19

यहाँ पर जिस भरत के नाम पर यह विशाल देश भारत कहलायेगा उस पुत्र की उत्पत्ति के लिए 'प्राचीनार्कं प्रसूय' इस औपम्य विधान में कितना विराट् तत्त्व छिपा हुआ है? इसी प्रकार -

"अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव" इत्यादि स्थलों में भी कालिदास की अनुभूति की विशालता के दर्शन होते हैं।

~~[illegible]~~ उपमा सौन्दर्य के अन्य स्थल -

कालिदास के काव्यों में उपमा के एक से एक बढ़कर आकर्षक चित्र अंकित हैं इनमें से उपमा सम्बन्धी कुछ चित्ताकर्षक स्थल द्रष्टव्य हैं -

शाकुन्तल के चतुर्थ अंक में कण्वद्वारा पति-गृह जाने वाली धर्मपुत्री शकुन्तला की उपमा शर्मिष्ठा से तथा भावी पुत्र की उपमा पुरु से की गई है, जो अत्यन्त स्पृहणीय है -

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि। शा० 4/07

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ --- पार्वती परमेश्वरौ
रघु० 01/01

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महाकवि कालिदास, उपमासम्राट् कालिदास, दीपशिखा कालिदास उपमा के लिए जगत्वन्दनीय हैं। अतः कहा गया है :-

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवं दण्डिनः पदलालित्यं
माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥